15/07/2020

Ajeet kumar
Assistant Professor
C.M.J college

PHILOSOPHY (Hons) Paper VIII

GROUP - B

PHILOSOPHY of Religion

धर्म दर्शन ~~[illegible]~~ का स्वरूप

धर्मदर्शन दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। जब दार्शनिक दृष्टि से धर्म का अध्ययन किया जाता है, तो उसे धर्म-दर्शन कहते हैं। धर्म और धर्म दर्शन पर्यायवाची नहीं है। बल्कि दार्शनिक विधि से धर्म का अध्ययन है, जॉन हिक के अनुसार धर्म के बारे में दार्शनिक चिन्तन को धर्म दर्शन कहते हैं। विलियम पी आल्स्टन के अनुसार धर्म-दर्शन में धर्म द्वारा किए जाने वाले दावों की तर्कबुद्धि के आधार पर समीक्षा की जाती है। धर्म-दर्शन में ईश्वर तथा अन्य मौलिक धार्मिक मान्यताओं के पक्ष-विपक्ष में दी जाने वाली युक्तियों की समीक्षा की जाती है।

धर्म-दर्शन के स्वरूप को स्पष्टता से समझने के लिए तीन

बातों को समझना जरूरी है। धर्म दो प्रकार
के हैं: (1) लौकिक विधि धर्म (2) पारलौकिक
विधि को धर्म को धर्म पर थोपते
लागू किया जाता है।

धर्म शब्द के अर्थ को स्पष्ट करना
या धर्म के स्वरूप को निर्धारित
करना धर्म दर्शन की केन्द्रीय समस्या
है। इसकी विस्तृत चर्चा करते
धर्म दर्शन में धर्म शब्द का प्रयोग
अंग्रेजी शब्द के religion के पर्याय
के रूप में किया जाता है इस अर्थ
में पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम
हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म आज
दुनिया के ~~उद्भव~~ प्रमुख जीवित धर्म
है। धर्म-दर्शन में धर्म का अध्ययन
मुख्यतः इन्हीं धर्मों के आलोक
में किया जाता है। हालांकि धर्म दर्शन
में आदिम धर्म के प्रमुख रूपों
की और धर्म के उद्गम की चर्चा
की जाती है। धर्म के कई पक्ष होते
है और धर्म का अध्ययन भी
अलग अलग दृष्टि से किया जाता है।